विनम्र श्रद्धांजलि

विज्ञान प्रकाश – विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जर्नल के सलाहकार मण्डल के वरिष्ठ सदस्य, वनस्थली विद्यापीठ के कुलपति एवं महिला शिक्षा के प्रणेता **प्रो. आदित्य शास्त्री** का अकस्मात ही 24 मई, 2021 को 58 वर्ष की आयु में निधन हो गया। न सिर्फ इस मण्डल के लिए अपितु समस्त शिक्षा जगत के लिए यह क्षति अपूरणीय है।

महिला शिक्षा और वनस्थली विद्यापीठ के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने वाले प्रो. आदित्य शास्त्री स्वतन्त्रता सेनानियों पं. हीरालाल शास्त्री और पद्म भूषण श्रीमती रतन शास्त्री के पौत्र थे, जिन्होंने 1935 में वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना की थी। पं. हीरालाल शास्त्री राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री थे पर जल्द ही राजनीति से संन्यास ले वे पूरी तरह महिला शिक्षा और ग्रामीण पुनरुत्थान को समर्पित हो गए। ऐसे सरोकारी वातावरण में प्रो. शास्त्री का बचपन बीता। उनके पिता प्रो. दिवाकर शास्त्री और माता श्रीमती शकुन्तला शास्त्री भी वनस्थली में शिक्षण व प्रशासनिक कार्य से जुड़े थे। ऐसे शिक्षा के माहौल में पालन–पोषण हुआ तो पुस्तकें प्रो. शास्त्री की मित्र बन गईं। गीता, महात्मा गाँधी द्वारा लिखित पुस्तकें तो उन्होंने बचपन में ही पढ़ लीं। वे एक प्रतिभावान छात्र थे और राजस्थान बोर्ड की परीक्षा में विज्ञान विषय में चतुर्थ वरीयता प्राप्त की । चुनिंदा संस्थानों से उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की। कम्प्यूटर साइंस और गणित में डुअल डिग्री बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड साइंस, पिलानी से प्राप्त की और पीएच.डी. विश्व के सर्वश्रेष्ठ प्रौद्योगिकी संस्थान मैसाच्युसैट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, यू.एस.ए. से की।

उच्च वेतनमान वाली नौकरी छोड़कर उन्होंने वर्ष 1991 वनस्थली को अपनी कर्मभूमि चुना और अंत तक वे वनस्थली की सेवा में लगे रहे। वर्ष 2002 में जब वे कुलपति बने तब वे सबसे युवा कुलपति थे और अब सबसे वरिष्ठ। उनके नेतृत्व में संघर्षशील वनस्थली वित्तीय रूप से सुदृढ़ हुई और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक की ख्याति अर्जित की। टाइम्स हायर एज्यूकेशन की रैंकिंग के हिसाब से वनस्थली विश्व का द्वितीय सर्वोत्कृष्ट महिला विश्वविद्यालय है और राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा A++ (CGPA 3.63) प्राप्त है।

ये ऊँचाई वनस्थली छू पाई प्रो. आदित्य शास्त्री की दूरदृष्टि और सटीक रणनीतियों के कारण। उन्होंने शोध, नवाचार व शोध प्रकाशन को बढ़ावा दिया। स्वयं भी शोध पत्र व पुस्तकें लिखीं। जब कम्प्यूटर साइंस की पाठ्य पुस्तकें सिर्फ अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध थीं, उस समय उच्च गुणवत्ता की कम्प्यूटर विषयक पुस्तकों का लेखन हिन्दी में किया। शोध केन्द्रों की वनस्थली में स्थापना की और इन्डस्ट्री 4.0 जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी वाले ऑटोमेशन सेंटर की भी स्थापना की। STEM विषयों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए बड़े प्रयास किए और सफल हुए।

प्रो. आदित्य शास्त्री का इस जर्नल को योगदान भी सराहनीय है। अत्यन्त व्यस्त रहने के बावजूद भी वे जर्नल से जुड़े कार्य के लिए वक्त निकाल लेते थे। वे महिला शिक्षा के शिखर पुरूष तो थे ही, हमारे भी पथ प्रदर्शक थे। व्यक्तिगत तौर पर वे सर्वगुण सम्पन्न, सौम्य व सर्व समावेशी थे। उनका जाना शिक्षा के क्षेत्र में एक युग का अंत है। चुनौतियों का सामना करने की दृढ़ इच्छाशक्ति व उनके महान आदर्श हमें सदैव प्रेरणा देंगे। प्रो. शास्त्री के असमय निधन से एक सपना खत्म हो गया है, एक लौ बुझ गई है।

ऐसे महान व्यक्तित्व के विचारों और दृष्टि का अनुसरण कर हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।